

रिच्य. Up. 3, 9. MBu. 1, 8354) 114, 3, 6. AV. 8, 9, 14. 9, 10, 19. 19, 27, 4. पु-  
नो ब्रूयाणि कल्पय 1, 24, 1. वेदिं भूमिं कल्पयित्वा 13, 1, 32. पर्वतान्भिर्गो-  
भिर्ब्रूयांश्च कल्पयत् 53. 14, 1, 53. य इमा विश्वा भुवनानि चाकूपे 7, 87, 1.  
Çat. Br. 2, 4, 2, 3. 13, 2, 10, 1. vom Ausführen heiliger Gebräuche: नाना-  
हेभिर्वयं कल्पयामः LĀṬJ. 4, 3. अग्निप्रचं स्वरसामस्य ज्योतिष्टोमस्य एके क-  
ल्पयति ebend. — कल्प वृत्तिं कल्पयसि. भिक्षुणा वृत्तिं कल्पयामि MBu. 1,  
700. fg. पौत्रीमिष्टिमकल्पयत् R. 1, 33, 1. समतातस्य शैलस्य वासमकल्प-  
यत् 2, 98, 29. 3, 11, 19. पूजाम् 1, 69, 7. कल्पितायति: KATHS. 24, 119. त-  
स्य — साहाय्यं कल्पयिष्यामि R. 3, 63, 16. स्वचित्तकल्पितो गर्वः PAÑKAT.  
1, 337. ग्रन्थाः (ताराः) कल्पयन्तिव KATHS. 1, 2. अशनिः कल्पित एष वेध-  
सा RAGH. 8, 46. पैस्तवभेदैर्धिलोकनायो लोकानचोक्रुत् Buṅ. P. 3, 3, 8.  
पत्येकावयवैर्लोकान्कल्पयति (bilden d. i. für gebildet halten) मनीषिणः  
2, 3, 36. भूर्लोकः कल्पितः पद्मो भुवर्लोकः अस्य नाभितः। स्वर्लोकः कल्पि-  
तो मूर्ध्ना 42. सप्तम्याः पद्मो कल्पयति macht aus dem 7ten casus den 6ten  
P. 7, 1, 52. Sch. कुट्टकुमुमैः कल्पितार्थाय MEGH. 4. वाय्वजलौघकल्पितन-  
दीपूरेण AMAR. 62. ÇĀK. 70. मनुर्धमिनिदं शास्त्रमकल्पयत् M. 1, 102. (भा-  
रतस्य) मयैव प्रोच्यमानस्य मनसा कल्पितस्य च MBu. 1, 77. स्वप्नकल्पित  
im Schlafe gebildet, im Traume gedacht BALAB. 43. ohne स्वप्न eingebil-  
des (Gegens. वास्तव) 34. — 9) einen Spruch sprechen, welcher das Zeit-  
wort कल्प् enthält Çat. Br. 9, 3, 2, 8. In dieser Bed. eigentlich denom.  
von कल्प. — 10) zerschneiden, nur im Prākṛt zu belegen: धीवलक-  
ल्पिग्रस्तं लोकिग्रमच्छस (d. i. धीवरकल्पितस्य रोहितमत्स्यस्य) ÇĀK. 84,  
22. Vgl. कल्पक, कल्पन und कल्पनी. Diese Bed. mag sich durch Miss-  
verständnis von Verbind. wie वृष्टशः कल्पय् (im Prākṛt ÇĀK. 74, 6)  
zertheilen entwickelt haben; vgl. übrigens कृपाण und कृपाणी. — Nach  
Vop. (s. Duātup. 33, 74) hat कल्पय् auch noch die Bed. von युति und चित्र.  
desid. चिकृप्सति und चिकल्पयते P. 1, 3, 92. 7, 2, 60.

— अनु nach Jmd sich ordnen, richtig auf Jmd folgen: आहुतीरिवा-  
स्य कल्पयति ता अस्य कल्पमाना राष्ट्रमनुकल्पते TS. 3, 4, 8, 3. देवविंशं ख-  
लु वै कल्पमानं मनुष्यविंशमनुकल्पते 6, 1, 5, 3; vgl. Ait. Br. 1, 9. — caus.  
nach Jmd ausführen, folgen lassen: तथा सतो शाखायनिनः पटुक्विम-  
न्तीरनुकल्पयति LĀṬJ. 4, 5. अद्भ्यम् (den vorangegangenen Worten) Glau-  
ben schenken R. 5, 36, 13. अनुकल्पित begleitet von (instr.), verbunden  
mit: श्रिया ब्राह्मणानुकल्पिताः MBu. 13, 2150.

— समनु caus. Jmd (acc.) zu Etwas (loc.) verhelfen, theilhaftig machen:  
उदित्वे च नृपतिर्गङ्गा समनुकल्पयत् er machte sie zu seiner Tochter  
MBu. 3, 9964.

— अभि einem Andern (acc.) entsprechen, dasselbe ausdrücken: वास्त-  
निकावृत्तं अभिकल्पमानाः VS. 13, 25. अभिजिताभिकृताः Çat. Br. 12, 3, 1,  
4. fgg. अद्यावाहुः स्वरसामाभिकृते 8. कृदा मनीषा मनसाभिकृतः KATHOP.  
6, 9. ÇVETĀÇY. Up. 4, 17. 3, 13. — caus. in Ordnung bringen, zurechtma-  
chen: वासं चाप्यभ्यकल्पयत् R. 2, 34, 17.

— अथ 1) entsprechen —, richtig sein: तयदक्षो न तद्वकल्पते Ait.  
Br. 6, 2. न वा एतस्यानिष्टक आहुतिरिवकल्पते TS. 5, 4, 10, 3. Çat. Br.  
2, 5, 2, 48. 14, 7, 2, 6. 12, 4, 2, 2. यत् एवैष उभात्रावकृतः 1, 6, 2, 6. अन्व-  
कृत TS. 7, 1, 4, 3. Çat. Br. 1, 1, 1, 8. 3, 2, 18. 4, 1, 37. 2, 1, 2, 2. 4, 1, 4, 6. 6,  
6, 1, 4. — 2) sich zu Etwas (dat.) eignen, zu Etwas verhelfen, dienen:  
तयापि तच्छक्तिविसर्ग एषो सुखाय दुःखाय क्षिताक्षिताय । वन्धाय मोक्षाय

H. Theil.

च मृत्युवन्मनोः शरीरिणां संसृतये ऽवकल्पते ॥ Buṅ. P. 6, 17, 23. — caus.  
1) in Ordnung bringen, zuriisten, zurechtmachen: पुनर्दत्तामवाकल्प-  
यन् Çat. Br. 3, 4, 2, 1. 1, 3, 2, 13. 6, 1, 9. नान्यद्वतादशनमवाकल्पयन् 3, 2, 1,  
10. संभारानवकल्पय MBu. 3, 10374. geeignet anwenden: तो मा गते ऽव-  
कल्पय Çat. Br. 1, 8, 1, 9. (स्तवः) प्रातःसवने प्रत्यक्षमवकल्पयते 4, 3, 2, 12.  
4, 1, 2. — 2) für möglich halten: ज्ञातु (oder यत्) तत्र भवान्वयत्वं यावपि  
नावकल्पयामि P. 3, 3, 147. Sch. Vgl. अनवकृति 145. — desid. vom caus.  
zurechtmachen —, zuriisten wollen: तेभ्यः प्रातःसवने ऽवाचिकल्पयिष्यन्  
(सोमपीथम्) Ait. Br. 3, 30.

— या स. आवाकल्प.

— उद् caus. in's Dasein rufen, schaffen: वा वशा उद्कल्पयन्त्या य  
ज्ञादुदत्त्य AV. 12, 4, 41.

— उप 1) passend —, zur Hand sein: यतमदस्य कर्मापकल्पते Çat.  
Br. 6, 2, 2. 13, 39. 13, 4, 2, 1. वधं नार्हति चेन्नेो ऽपि तत्रेदमुपकल्पते so ge-  
bührt es sich Buṅ. P. 6, 18, 42. — 2) dienen zu, gereichen zu; mit dem  
dat.: सर्वत्रातिकृतं भेदे व्यसनायोपकल्पते R. 5, 23, 21. — 3) sich gestalten  
zu, werden, sein; mit dem dat.: वार्थपि अद्भ्य दत्तमनयायोपकल्पते M. 3,  
202. धर्मस्य ह्यापवर्गस्य नार्थो ऽर्थयोपकल्पते Buṅ. P. 1, 2, 9. — partic.  
उपकृत 1) zur Hand befindlich, fertig, bereit Ait. Br. 7, 32. ज्ञाया उप-  
कृता भवति Çat. Br. 13, 4, 1, 8. उपकृतसोम KĀTJ. Çr. 7, 1, 2. धेनवः KAUC.  
126. आसनेपूषकृतेषु M. 3, 208. यस्वेतान्युपकृतानि (KULL.: = उपयोगार्थ  
कृतसंस्काराणि) द्रव्याणि स्तेनयेन्नरः 8, 333. उपकृतं यदेतन्म अभिपेकार्थ-  
मुद्यतम् R. 2, 22, 4. zurechtgemacht, zugerüstet: सूतापकृतान् (रथान्) MBu.  
1, 4098. — 2) gebildet, hervorgebracht: तत्रापि प्रियव्रतरथचरणपरिखतिः  
सप्तभिः सप्त सिन्धव उपकृताः Buṅ. P. 5, 16, 2. — caus. 1) zurechtma-  
chen, zuriisten, zubereiten; herbeischaffen, herbeiholen: तन्मा नायन्यक-  
ल्पोपासासि Çat. Br. 1, 8, 1, 4, 5. स्थालीं चैवाक्षीपं चोपकल्पयित्वै ब्रूयात्  
4, 3, 2, 2. उपयमनीः 3, 3, 2, 1. वीणां ÇĀK. Çr. 17, 3, 1. दुन्दुभीन् 4, 1,  
त्रीनिपूनुपकल्पयस्व LĀṬJ. 3, 10. ĀÇV. GRH. 3, 8, 4, 6. स आहोपकल्पय-  
धमिति तदुपकल्पयते वंसमकृते वसने KAUC. 94. उपकल्पितम् (द्रव्यम्)  
GRHJASĀNGR. 2, 8. यात्रार्थमुपकल्पयत् MBu. 1, 6386. अभिपेचनिकं यत्ने रा-  
मार्थमुपकल्पितम् 3, 15970. R. 1, 12, 29. यौवरथ्याय रामस्य सर्वमेवोपकल्प्य-  
ताम् 2, 3, 4. 31, 2. 86, 3. को ऽयमन्नमिदं भुङ्क्ते मर्त्यमुपकल्पितम् MBu. 1,  
6276. 13, 2834. वमनान्युपकल्पयेत् Suçr. 1, 160, 12. कुम्भास्तत्रोपकल्पि-  
ताः N. 23, 10. KATHS. 26, 6. Buṅ. P. 2, 1, 14. मरुगमम् — वडुशस्त्रोप-  
कल्पितम् R. 6, 76, 22. सद्गैरुपकल्पितान् (रथान्) mit Pferden ausgerü-  
stet d. i. bespannt MBu. 1, 4098. — 2) für Jmd oder zu Etwas bestim-  
men, ansehehen: मरुतं वा मरुतं वा ओत्रियायोपकल्पयेत् JĀG. 1, 109.  
शिष्टे मांसं निकृतं पक्षोपणयोपकल्पितम् R. 2, 96, 38. रत्तिदेवस्य गते ताः  
(die Kühe) पशुवेनोपकल्पिताः MBu. 13, 3351. पशुवाञ्च विनिर्मुक्ताः प्रदा-  
नायोपकल्पिताः 3352. स मयात्रोपकारार्थमाक्रुमुपकल्पितः KATHS. 20,  
194. — 3) aufstellen, hinstellen: यस्य पुच्छाग्ने — ध्रुव उपकल्पितः, दन्ति-  
णपार्थं नन्त्राण्युपकल्पयति Buṅ. P. 5, 23, 3. 20, 30. मन्दरशैलोपकल्पि-  
तस्य मधुसूदनयतनस्य PRAB. 112, 19. hinwenden zu: इति नतिरुपकल्पि-  
ता वितृप्ता भगवति Buṅ. P. 1, 9, 32. विविधदेवतोपकल्पितापूजापयाचित  
PAÑKAT. 213, 14. — 4) hergeben, mittheilen: स्वमहिमानं चाप्यवर्गाध्यमु-  
पकल्पयिष्यन् Buṅ. P. 5, 3, 9. — 5) annehmen, statuiren: कार्यतुमुपक-  
ल्प्य Śū. D. 31, 8.

11\*